

राज

कॉमिक्स

मूल्य 15.00 रुपए

बागाराज का दुश्मान



नागराज का दुश्मन

लेखक: तरुण कुमार वाही
सम्पादक: मनीष चन्द्र गुप्त
कलादिबर्धन: प्रताप मुलीक
चित्रकार: चंदू
सुलेख: विलास पालवणकर

प्रोफेसर नागमाणि का बनाया एक अदभुत नागमानव, नागराज। आतंकवादियों का घोर शत्रु, नागराज। जिसका सफर आसाम के घनघोर जंगलों से आरम्भ होकर शंकर-शहशाह के आश्रम में पहुंचकर समाप्त नहीं हो गया था। जबतक विश्व में एक भी आतंकवादी दल मौजूद है, नागराज का ये खूनी सफर जारी रहेगा।



भारत की राजधानी दिल्ली की भीड़ भरी एक सड़क पर एकाएक उस वृद्धाने चीख-चीखकर सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया -



पकड़ो! वह मेरा पर्स ले भागा है।



फिक्र मत कर माई, हम अभी तेरा पर्स वापिस लेकर आते हैं। चल बहादुर!

दोनों हवलदार उस उधक्के के पीछे लपके -



बच्चू, जायेगा कहां बचकर?



उफ

इस माल गाड़ी को भी अभी आना था।

ट्रेन गुजरते ही दोनों हवलदारों का माथा घूम गया -



वृद्धा के साथ कुछ और लोग भी वहां आ पहुंचे -



अरे! तुम दोनों इतने हट्टे-कट्टे होकर एक छोटे-मोटे चोर-उचक्के को नहीं पकड़ पाए।



अरे, ट्रेन-ट्रेन क्या करता है। नागराज का नाम सुना है?



अगर नागराज यहां होता तो किसी की क्या मजाल थी कि वो उचक्का मेरा पर्स छीनकर ले जाता।

उसने विश्व के बड़े-बड़े आतंकवादियों के छक्के छुड़ा रखे हैं।...









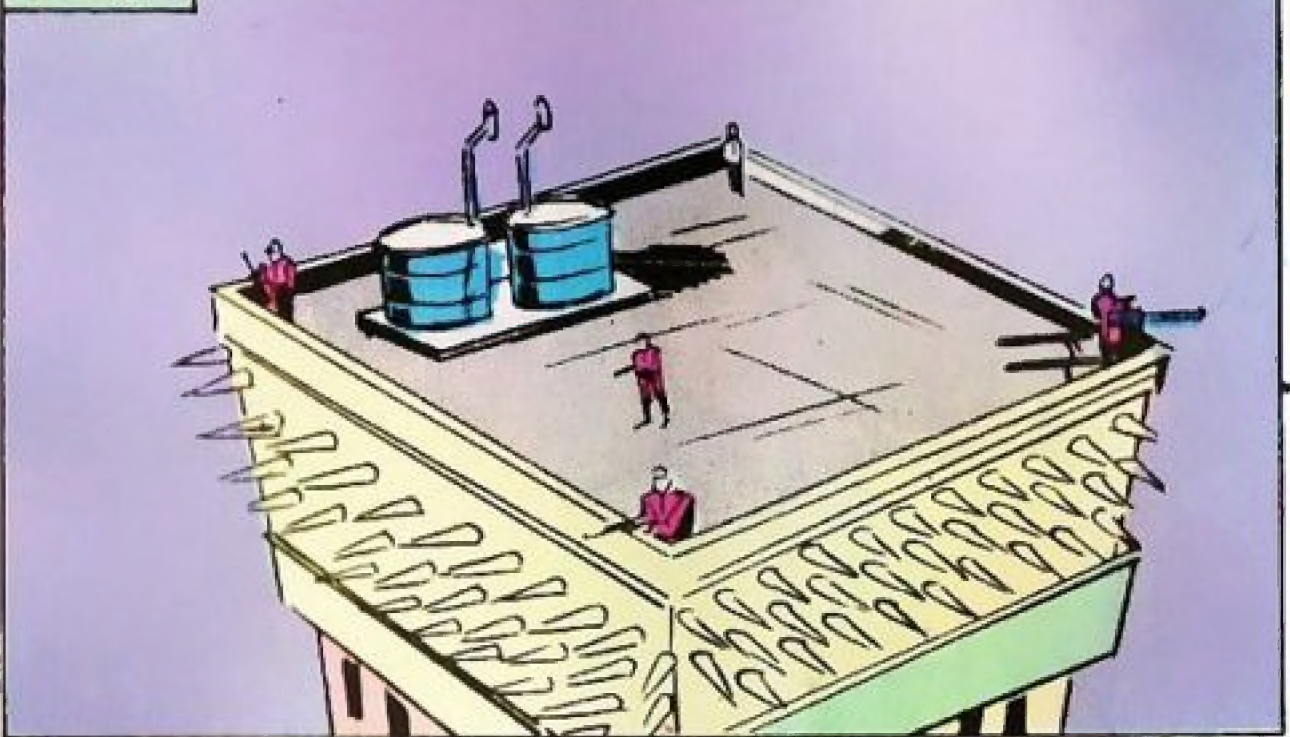
उधर एक तरफ नागराज का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर था और इधर स्टिडजर लैण्ड में अंधेरे में डूबी एक इमारत—



छत के प्रत्येक कोने पर एक-एक प्राशिक्षित कमांडो...



इमारत की बीसवीं मंजिल, जिसकी चारों दीवारों पर लोहे की कीलें लगी हैं—



उन कीलों में हर समय घातक करन्ट प्रवाहित रहता है...



... जिनसे स्पर्श मात्र का मतलब है—मौत!

...जिनकी गानें किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को देखते ही भून देने को आतुर रहती हैं—



इमारत की इस बीसवीं मंजिल पर स्थित था यह बैंक...



... जिसके वॉल्ट में बड़े-बड़े उद्योगपतियों के गुप्त खातों की बेशुमार दौलत कैद थी...



... और था सैकड़ों लॉकर्स में कैद एक अनमोल खजाना।

और आज इस बेशुमार दौलत पर निगाहें थीं जुरिच प्राइड होटल की तीस मंजिल इमारत की छत पर खड़े, उस साध की-



और यह साया था नागराज का-

हा हा हा !
कुछ ही देर में
इस बैंक की सारी
दौलत मेरी होगी।



न... न... न... चौंकिप मत।

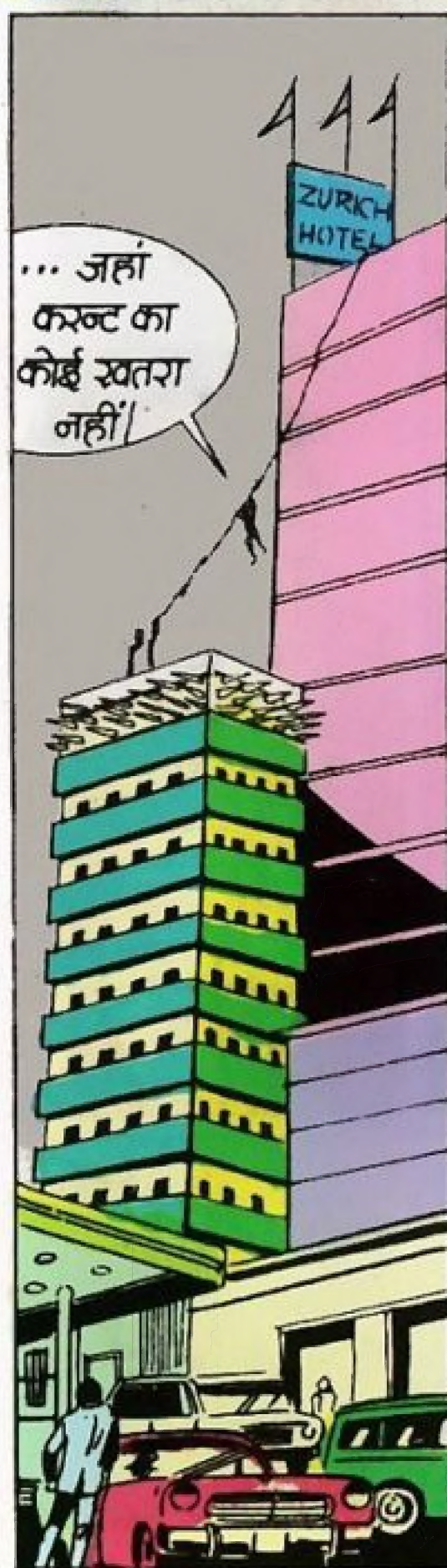
यह शत प्रतिशत नागराज ही है-

दीवारों पर
लगी कस्टम लोहे की
कीलें मेरा क्या बिगाड़
लेंगी!



सर्प रस्सी छूट पड़ी-











पलक झपकते ही चारों की लाशें फर्श पर पड़ी थीं-

आज बँक लूटने से मुझे कोई नहीं रोक सकता।



सीढ़ियों से उतरते ही नागराज का सामना बैलरी में गड़गड़ाने वाले कमांडोज से हुआ-

अरे नागराज!

नागराज! यहाँ?

नागराज!



किसी को कुछ पूछने तक का अवसर नहीं मिला-



तीनों कमांडोज खड़े तो बिजली की सी तेजी के साथ हुए, लेकिन उनका सामना नागराज से था-



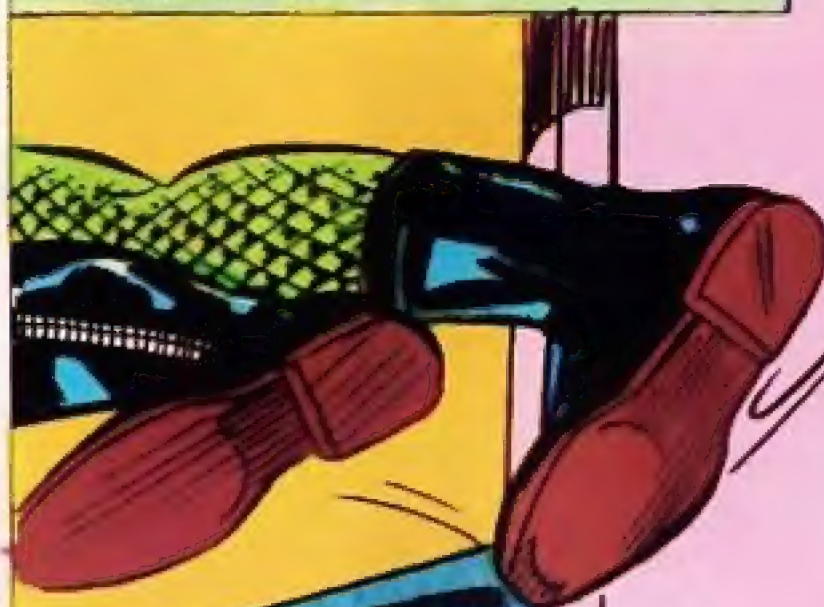
रस्सी खींचते ही तीनों कमांडोज तीव्र झटके के कारण नागराज की बाँलों के झिकजे में आ फंसे थे-

तीनों कमांडोज को समाप्त कर नागराज हवा में उछला—

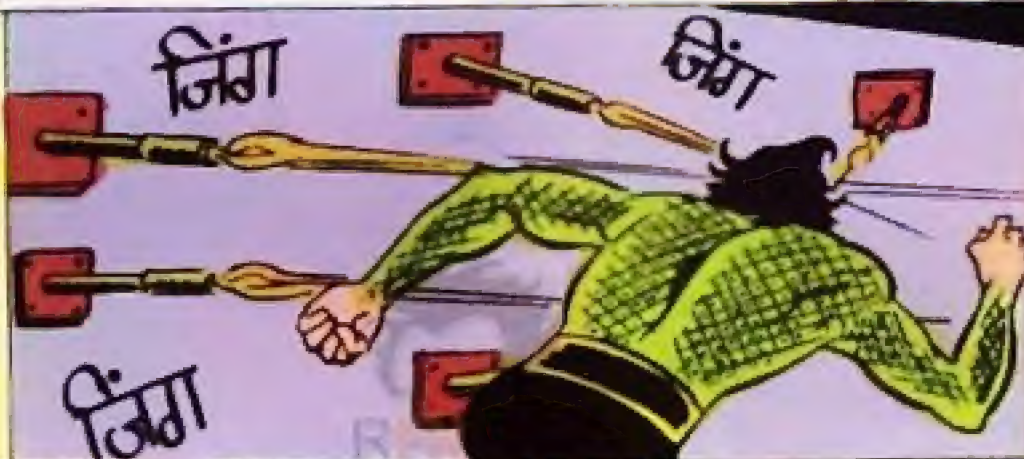
गेट में करन्ट दौड़ रहा है। लेकिन मैं इसको छुऊँगा नहीं।



नागराज ने वास्तव में ही उसे छुआ नहीं था। अगले ही क्षण वह गेट के उस पार था—



नागराज वॉल्ट की ओर जाने वाली उस पतली गैलरी में दौड़ पड़ा। उसी क्षण दीवारों से ऑटोमैटिक गोलें निकल कर नागराज पर बरस पड़ीं—



VAULT

ओह! दीवार में छिपी गोलें!

गोलियों की बौछार भी नागराज को न रोक सकी—

झिंग झिंग

कोई दूसरा होता तो उसकी लाथा फर्क पर पड़ी होती, लेकिन मुझ पर बरस कर ये गोलियाँ भी अपने असली होने पर शक करेंगी!



नागराज वॉल्ट के दरवाजे तक जा पहुँचा और तब तक वहाँ भी झाँकी गोलियाँ बरसती रहीं।

अचानक नागराज के हाथ में कैप्सूल जैसी कोई चीज दिखने लगी—



नागराज ने कैप्सूल वॉल्ट के दरवाजे पर स्विच मारा-



कैप्सूल के रूप में वह एक शक्तिशाली बम था, जिसने वॉल्ट के एक फुट मोटे लोहे के दरवाजे के चिथड़े उड़ा दिये-

अब मंजिल नागराज के सामने थी-



स्वजाना इस तहखाने में है और तहखाने के फर्श पर बरछियों का जाल बिछा है...

...ताकि इस अंधेरे में कोई लुटेरा अगर वॉल्ट लूटने की हिम्मत करके भीतर एक कदम भी बढ़ाए तो यह कक्ष उसके लिए मौत का सलीब बन जाए।

नागराज की सर्व-रस्सी छत पर लगे पंखे पर कस गई और...



...नागराज झूलता हुआ...

...उन बरछियों को पार कर बेबुमार दौलत के बीच जा पहुंचा-



बाहर के सर्वाधिक सुरक्षित बैंक की यह बेबुमार दौलत अब मेरी है।

जूते की ठोकर से उसने
दौलत को आजाद
किया।

वागाराज इ.

सर, वह तो
ठागराज है।

जागराज और बैंक
डुकैती ! असम्भव !

लेकिन कमांडो अफसर को अपनी आंखों पर विश्वास करना ही पड़ा-

यह शत-प्रतिशत नागराज था। मुझे तुरन्त यह सूचना दूसरे केंद्रों को प्रसारित करनी होगी...



और इस सूचना ने सनसनी फैला दी-

नागराज को देखते ही गिरफ्तार कर लो।



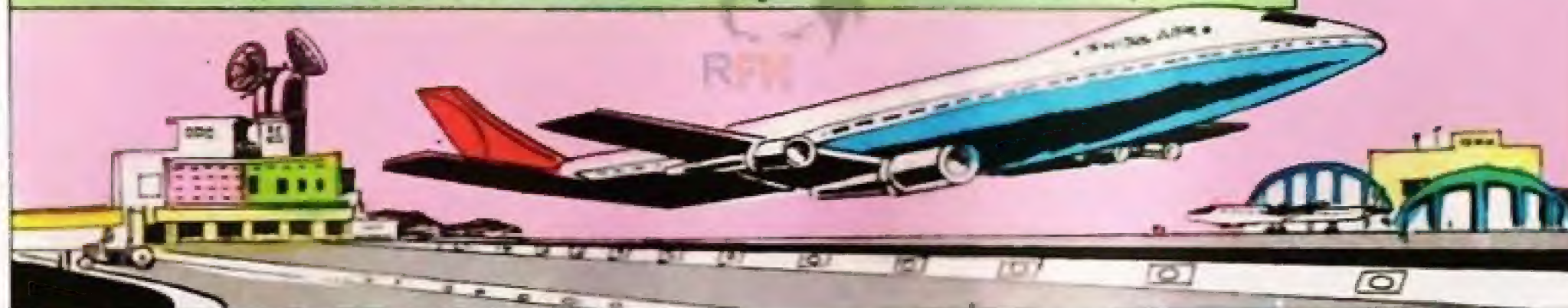
नागराज द्वारा स्विस् बैंक डकैती...



अगले दिन के न्यूजपेपर सुर्खियों के साथ चीख रहे थे-



जिनेवा से लंदन जानेवाले स्विस् एयर के एक बोइंग विमान ने एयर पोर्ट से उड़ान भरी-



विमान के साथ ही एक शरीर भी हवा में उठ गया-



विमान के नीचे कोई लटका हुआ है।

कौन होगा? कहीं कोई टैरिस्ट तो नहीं!



हर चेहरा भय व आतंक से जड़ पड़ गया-

इस प्लेन से अब लाशें ही उतारी जायेंगी।

कोई नहीं बचेगा।



सांपों की सेना ने उन्हें घेर लिया था। और घिरे हुए यात्रियों के चेहरों पर कांप रही थीं मौत की परछाइयां।

उधर कंट्रोल रूम से 'मैसेज' पाइलट कक्ष को प्रसारित कर दिया गया था, जिसे सुनते ही पाइलट कक्ष में अजीबना फैल गई-

कोई साया विमान से लटका हुआ देखा गया है। प्लेन दुस्त उतारने का ऑर्डर है।

असम्भव! भला ऐसा दुस्साहस कौन कर सकता है?



और अपने जीवन का सबसे हैरत-अंगेज कारनामा वे अब देख रहे थे-



पलक झपकते ही नागराज सामने से वायब हुआ और -

हैलो, कंट्रोल रूम, मैं विमान वापिस उतार रहा हूं। विमान पर नागराज आ पहुंचा है।

नागराज!
उसे तो देश की पूरी पुलिस तलाश करती फिर रही है। तुम फौरन विमान को नीचे उतारो।



लेकिन बहुत अचानक ही भूत की तरह प्रकट हुआ वहां नागराज -



विमान, अब नीचे नहीं अतरेगा!
ऑफिसर, बल्कि यहीं एयरपोर्ट पर
चक्कर लगाएगा...

त...तुम?

इन्सान है कि...
जादूगर!

... और तब तक चक्कर
लगाएगा जब तक इसमें
ईंधन की एक भी बून्द
बाकी है...



... जितने समय का ईंधन
विमान में मौजूद है। अगर
रुपया मिलने में अधिक समय
लगा तो बम ब्लास्ट हो
जायेगा।



... रुपया एक हेलीकॉप्टर में भेजा जाए।
मैं वह रुपया हेलीकॉप्टर से स्वयं ले लूंगा।
सोचने का समय नहीं है ऑफिसर्स। ढाई
सौ जिन्दगियां मेरे कब्जे में हैं।
ओवर!













फ़िस साहस जुटाकर कह ही गई-

नागराज, हमारे साथ तुम भी तो मरोगे, फिर बीस करोड़ रुपया कहाँ से लोगे?

तुमसे किसने कहा, मैं मरूँगा! और अब मेरा दिया गया समय समाप्त होने में केवल दो मिनट रह गए हैं।

...इन दो मिनटों में तुम विमान हवाई पट्टी पर उतार सको तो उतार लो। मैं चला।

नागराज नीचे कूद गया-

और पैराशूट की मदद से नीचे जाने लगा-

नीचे खड़े अधिकारी चौंक पड़े-

वह नागराज है। वह विमान से कूद गया है। एलर्ट, नीचे उतरते ही उसे गोलियों से भून डालो।



लेकिन अब विमान का क्या होगा ?

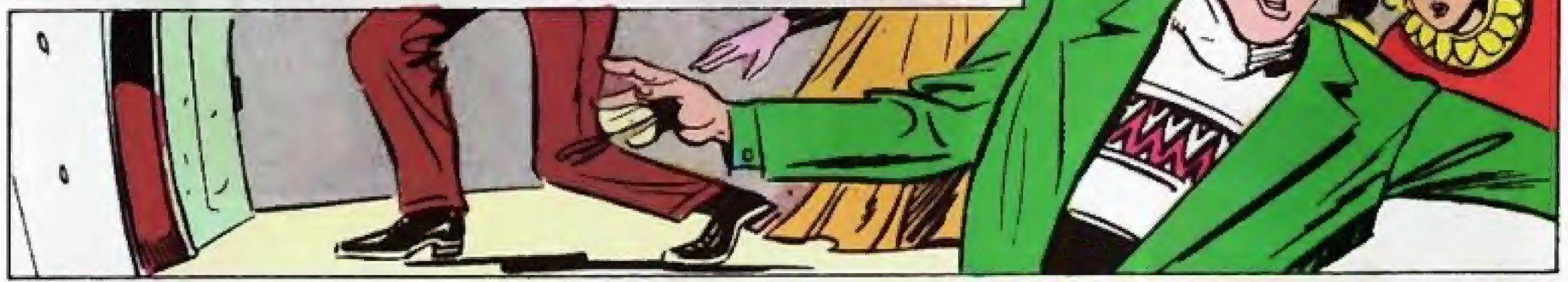
पाइलट उसे नीचे उतारने की कोशिश कर रहा है।



जबकि विमान के भीतर -

नागराज कूद गया। पैराशूट लाओ। कूदो।

बम फटने में कुछ ही क्षण शेष हैं। भागो, कूद जाओ।



एक यात्री बिना पैराशूट के ही कूद गया -

आ ५५५५५५



क्रिस और दूसरी परिचारिकाएं पैराशूट ले आईं -

जल्दी कीजिये, ये पैराशूट पीठ पर कसकर जल्दी से कूद जाइये।

HELP ME GOD

हे भगवान मदद कर।



मौत के भय से कांपते यात्री। कुछ पैराशूट कसने में सफल हो गए। कुछ नहीं। किन्तु कूद सभी पड़े थे -

कूद जाओ।

GOD HELP! HELP GOD!!

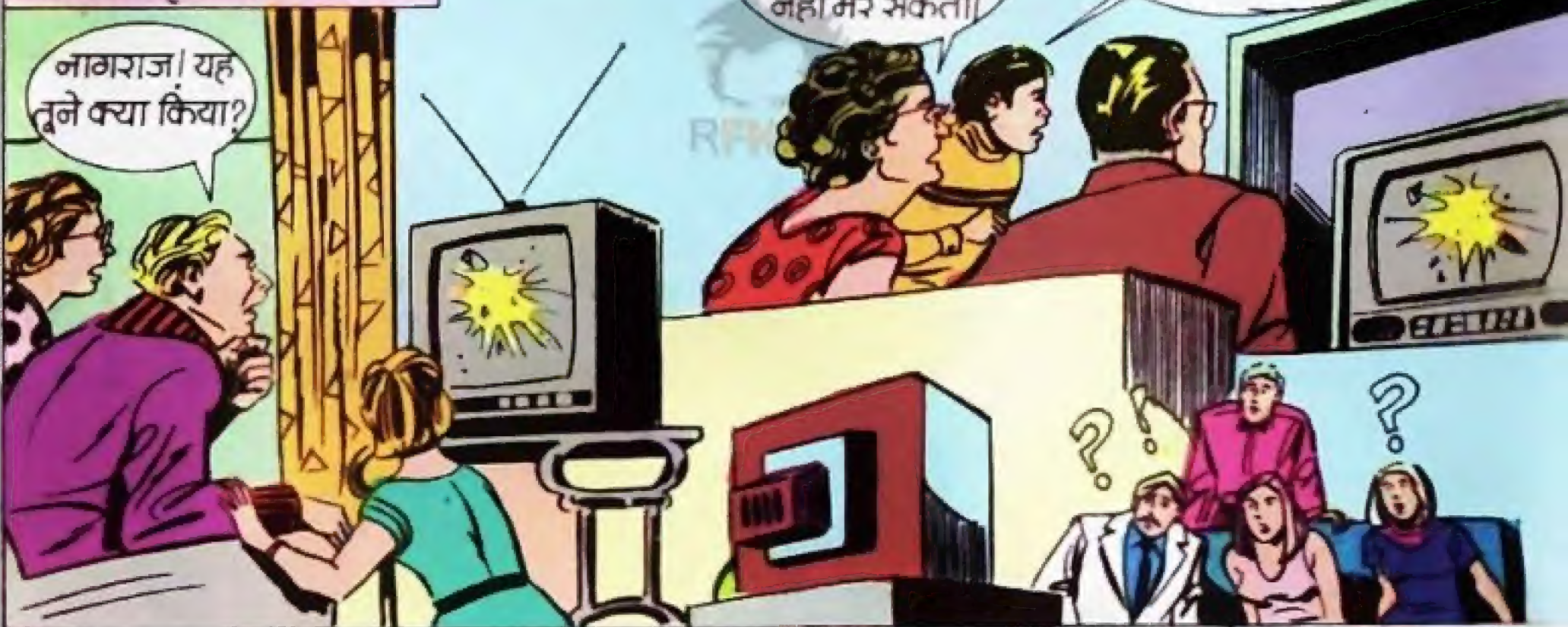
इसी क्षण एक गठन-भेदी धमाके के साथ विमान आग के गोले में परिवर्तित हो गया -



वह भयानक दृश्य सैकड़ों लोगों ने अपनी आंखों से देखा -



वे करोड़ों आंखें भीग गईं, जो अपने-अपने टी.वी. सैटों पर अपलक निगाहें गड़ाएं वह खौफनाक दृश्य देख रही थीं -



उधर नागराज के पांव हवाई पट्टी से दूर जमीन पर टकराए ही थे कि -



उसी क्षण दो कैप्सूल बम नागराज ने दो दिशाओं में फेंक मारे-



इधर धुआं छंटा, उधर नागराज वायब-



अगला दिन समाचारपत्र बेचने वालों की चांदी का था-

आज की ताजा खबर। नागराज, पागल और खूनी हो गया। सिट्जरलैण्ड में हंगामा।



भारत: स्थान गोआ! बच्चों का एक क्लब-इंटरनेशनल चाइल्ड केयर।



देश के कोने-कोने से आज इस क्लब के बाल-सदस्यों को आमंत्रित किया गया था-



और फिर सभी काम रोक दिये गए-



बाल सदस्यों की भीड़ नागराज के पुतले के इर्द-गिर्द आ जमा हुई और -



यह सुनते ही बच्चे शोर मचाने लगे-



नेता बालक ने आगे बढ़कर नागराज के बुत को आँखें दिखा दी-



उसी पल -

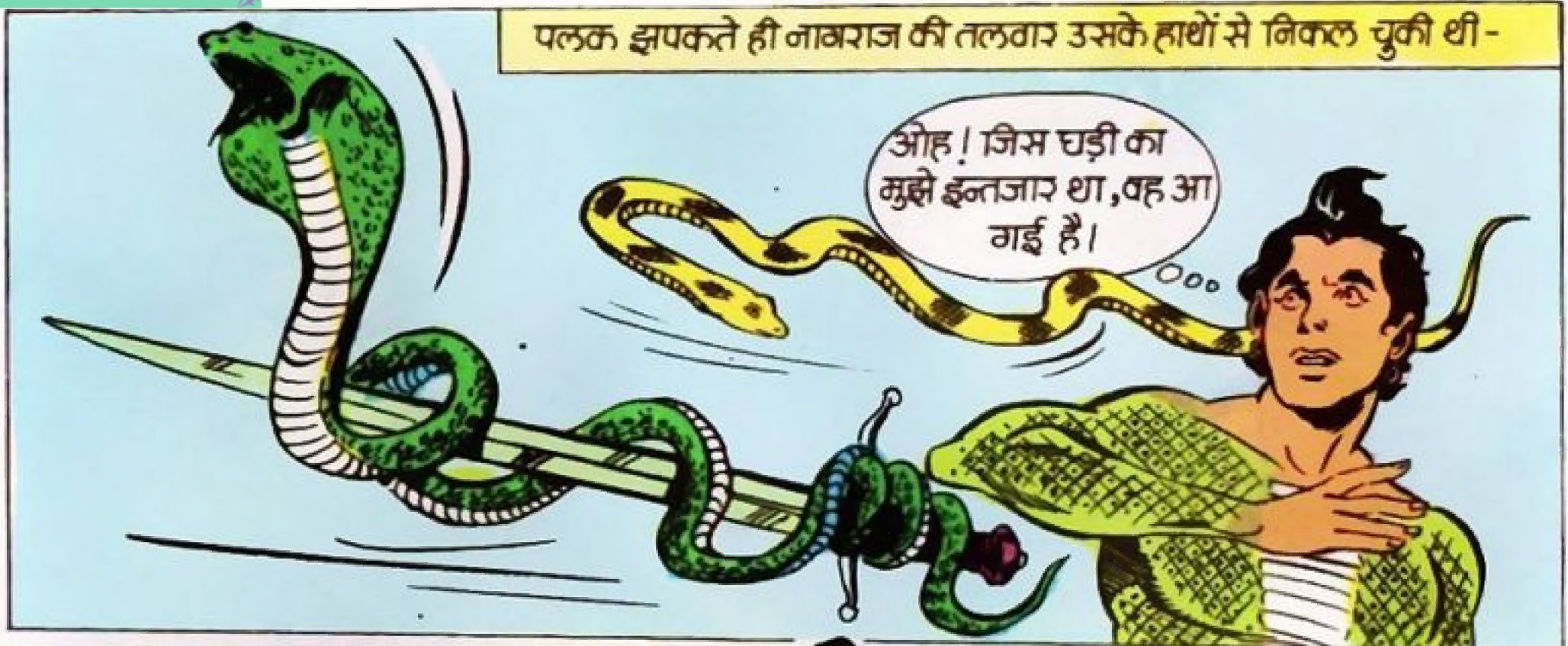


नागराज की दो धारी तलवार घूम गई-





पलक झपकते ही नागराज की तलवार उसके हाथों से निकल चुकी थी -



यह एकाएक ही क्या हो गया?
दूसरा नागराज कहाँ से पैदा हो गया?
असली कौन है? नागराज का दुश्मन कौन है?
इन सब धधकते प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए
नागराज का अगला ज्वालामुखी कॉमिक्स
पढ़ना न भूलें -

**दुच्छायाशी
नागराज**